रात्रि क्लास 14-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

तुम बच्चियां सर्विस लायक बन रही हैं। क्योंकि बाप को मदद करनी है ना बच्चों को। कौन सी मदद करनी है। हमजिन्स को पावनबनाना है। पावन बनने का तरीका तो बाप ने समझाया है। याद की यात्रा। यह ट्रान्स अथवा ध्यान दीदार में जाना यह बेकायदे है। याद की यात्रा से ही पाप मिटता है। ध्यान आद भक्ति मार्ग है। यह है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना। अभी है चढ़ने की बात। तुम समझते भी हो। उत्थान और पतन। आत्माएं बाप को याद करते2 पावन बन जावेंगी। ब बाप युक्ति बतलाते हैं। ऐसे नहीं जो पावन बनाते हैं, युक्ति बताते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप बच्चों से मेहनत कराते हैं। कृपा वा आर्शीबाद नहीं करते। समझाते हैं याद की यात्रा से अपने को राजतिलक दिलाओ। इस याद की यात्रा में ही विघ्न पड़ेंगी। यह मेहनत करनी है। बच्चों को बाप को याद कर घर चलना है। तकलीफ की तो बात ही नहीं। उठते-बैठते, चलते-फिरते आत्मा को अपने बाप को याद करना है। चक्र भी बुधि में है। यहां बाप के पास आते हैं रिफ्रेश होने। यहां तो जैसे देवी परिवार में रहते हो। वहां तो सेन्टर में आकर फिर चले जाते हो। जैसे कि स्कूल परीक्षा में चले जाते हो। परिवार में रहते भूल जाते हो। यहां तो बाप के पास आते हो। यह है बाप और भाईयों का परिवार। यहां बाप के सामने बैठे हो तो याद जरूर बाप की ही आवेगी। बाप सम्मुख समझाते हैं। पायन्ट जास्ती कोई नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझो। देहीअभिमानी भव। आत्माअभिमानी भव। यह किसने कहा? परमपिता परमात्मा ने कहा। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। बाप पतित पावन है ना। तो कैसे पावन बनावेंगे। गंगा में स्नान करावेंगे? नहीं। श्रीमत देंगे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनने के लिए। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पावन को, भ्रष्ठ ते भ्रष्ट पतित को कहा जाता है। भ्रष्ट बनने में 84 जन्म, श्रेष्ठ बनने की समझानी तो एक सेकण्ड में मिलती है। फिर पुरुषार्थ करना है। पढ़ाई में सबजेक्ट होती है। इसमें मुख्य सबजेक्ट है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। पहले2 हम आत्मा हैं फिर शरीर धारण किया है। शान्तिधाम में शरीर नहीं है। यहां पार्ट बजाने लिए शरीर लिया है। 84 जन्मों का पार्ट बजाना पड़ता है। तुम ही एक्टर्स हो जो तमोप्रधान से सतोप्रधान, सतोप्रधान से वे तमोप्रधान बनते हो। ब्राहमण देवता क्षत्री .... फिर आकर ब्राहमण बनते हो। सभी तो 84 जन्म लेते नहीं। कोई तो स्वर्ग में जाते भी नहीं। पीछे आते हैं। यह है ड्रामा का खेल। हरेक आत्मा एक्टर्स है। आत्माएं ऊपर रहती हैं। सभी को एक्ट में आना है। मनुष्य तन धारण कर। मनुष्य हर नये देवता में सुखी थे। वह अभी दुःखी बने हैं। पहले2 मनुष्यों की बात समझो फिर जनावरों की बात। पुकारते मनुष्य हैं ना। भल जनावर मिसल हैं परन्तु बुलाते तो मनुष्य ही हैं ना। जनावर तो नहीं बुलाते। तुम ही बुलाते हो तुमको ही बाप शिक्षा देते हैं। कांटे से फूल मिसल बनाते हैं। तुमको इयरेक्शन देते हैं, पढ़ाते हैं। याद भी टीचर को करना है। एमआब्जेक्ट भी है। वही बनना है। यह है बहुत2 सहज। तुम कल्प2 यह नालेज पढ़ते हो। तुमको स्मृति आई हम 5000 वर्ष बाद बाप से राजयोग सीख पुरुषार्थ करते हैं। जितना पुरुषार्थ उतना प्रारब्ध मिलती है। पढ़ाने वाला एक ही है। बाकी है हर एक के पुरुषार्थ पर। औरों को आप समान बनाना है। बड़े2 महारथी सेन्टर परहते हैं। तो आप समान बनाते हैं ना। तुमको भी आप समान बनाना है। बाप और रचना का परिचय तुम ही जानते हो। अभी तुम धणी के बने हो। आस्तिक बने हो। धणी से कितना वरसा लेते हो। वह बेहद का धणी। वह है हद का धणी। अपने घर का। यह है सारे बेहद के घर विश्व के धणी। विश्व को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। नर्क से स्वर्गवासी बनाते हैं। विश्व को चेंज करने वाले हैं। खुद चेंज नहीं होता। खुद एवर प्युर एवर शान्त है। शान्तिधाम का मालिक है। बच्चों को सुखधाम का मालिक बनाते हैं। अभी बाप के सम्मुख बैठे हो। यहां तो भाई2 के सम्मुख पढ़ते हो। यहां भाई बाप के सम्मुख आते हो। बाप से पढ़ कर आस्तिक बनते हो। फिर रावण आकर तुमको नास्तिक बनाती है। बच्चों में समझ है बाप आते हैं तुमको नई दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह पुरानी

दुनियाज है। नई दुनिया को तुम जानते हो। एक ही देवताओं का राज्य था। तुम पूज्य देवी-देवतायें थे। यह तुम भारतवासी ही पूज्य-पुजारी बनते हो। पूज्य देवी देवतायें कहे जाते हैं। तुम बच्चों को याद आता है हम पूज्य थे। अभी पुजारी बने हैं। अभी फिर पूज्य बन रहे हो। फिर पुजारी बनेंगे। सीढ़ी उतरेंगे। उत्थान में सिर्फ तुम देवी-देवतायें ही थे। मनुष्य नहीं थे। तुम देवता धर्म वाले ही थे। और कोई धर्म वाले मनुष्य नहीं थे। अभी फिर तुम देवी-देवता बन रहे हो। पवित्र से पवित्र सिर्फ तुम ही बनते हो। तुम कहते हो वह है वायसलेस पवित्र दुनिया। सिर्फ तुम ही रहते थे। समझते हो उस समय और कोई धर्म वाले नहीं थे। तो चन्द्रवंशी भी नहीं थी। अभी तुम कहेंगे हम सूर्यवंशी बनने आये हैं न कि चन्द्रवंशी। यह है संगम युग। तुम याद करते हो शान्तिधाम सुखधाम को। गजरा उसका चिन्तन करना भी बन्द। फास्ट हो गया ना। तुम्हारी बुधि है भविष्य तरफ। देवी गुण भी धारण करो। नोट करो कितने को सुख का रास्ता बताया। जीवआत्मा को पवित्रता-सुख-शान्ति मिलती है। तुम जीवात्मायें सतयुग में हो तो वहाँ झगड़ा आदि की बात ही नहीं। वहाँ आत्मायें रहती हैं। कोई भी अशान्ति का कारण होता नहीं। यहाँ अशान्ति होती है। एक दो को अशान्त करते हैं। सतोप्रधान है तो शान्ति का नाम ही नहीं। सतयुग में है शान्ति। कोई से भी अशान्ति नहीं मिलती। तो बाप जो शान्ति का सागर है उनको पुकारते हैं। परन्तु समझ नहीं है. विश्व में शान्ति कहते हैं। परन्तु वह तो जब तुम राज्य करते हो तब कहेंगे ना। विश्व में शान्ति। यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। और कोई मनुष्य मात्र समझा न सके। बाप ही तुम ब्राह्मण कुल को समझाते हैं। आदी देव एडम कहते हैं ना। तुमको कहते हैं दादा को भगवान क्यों कहते हो। बच्चे ने बोला दादा तो फिर भी मनुष्य है। तुम तो कुत्ते बिल्ले कछ-मछ को भगवान को भगवान कहते हो। हम तो फिर भी मनुष्य को कहते हैं ना। तो तुमको बेहद का नशा नम्बरवन नशा। फिर थोड़ा कम नशा सतयुग में। अभी है पुरुषोत्तम संगम युग। तुमको सतयुग का मालिक पुरुषोत्तम संगम युग पर बनाते हैं। इसलिए यह ब्राह्मण कुल है सर्व श्रेष्ठ। सेकण्ड नम्बर में तुम देवतायें बनते हो। ब्राह्मण नम्बरवन। तो एक तो बाप को याद करना पड़े। और फिर टीचर भी बनना है। टीचर भी नहीं पैगम्बर-मैसेन्जर बनना चाहिए। पैगाम देना है सभी को दो बाप का। वह है हद का बाप, यह बेहद का बाप। अभी बेहद के बाप को याद करना है। जिससे तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे। तुम खुद ही बाप की महिमा गाते हो। बाबा पतित पावन है। इसलिए उनको बुलाते हैं। वह है बेहद का बाप। यहाँ हैं हद के बाबायें। तो अभी देह के सम्बन्ध को भूल जाना है। तुम बच्चों को अभी स्वर्ग को याद करना है। स्वर्ग की स्थापना करने वाला बाप हम को मिला है। परन्तु पत्थर बुधि मनुष्य कुछ भी समझते नहीं हैं। तो पुरुषार्थ कर बच्चों को पारसनाथ बनना है। ऊंच ते ऊंच बनना है। तुम काल पर जीत पहन रहे हो। तो खुशी रहनी चाहिए ना। नशा रहना चाहिए। बाकी थोड़ी रही है। अभी सभी की वानप्रस्त अवस्था है। सभी जायेंगे फिर बिल किसको करेंगे। मरने बाद करेंगे या जीते जी। कहते हैं चार बच्चे लौकिक हैं पाँचवा है गुप्त। तो उनको बिल करनी होती है। बाबा सभी कुछ आप का है। भक्ति मार्ग में भी कहते थे बाबा आप आवेंगे तो वारी जावेंगे। अभी बाप कहते हैं मैं आया हूं तो मेरे साथ चंचलता मत करो। बिल कर ट्रस्टी बनाओ। अभी पापात्माओं के साथ धंधा न करना है। कोई पापात्मा को पैसा नहीं देना है। पैसे से सभी भारतवासियों को पुण्यात्मा बनाओ। खर्च भल तुम ही करो। सेन्टर खोलो। घर2 में गीतापाठशाला। चित्र लगा दो। श्याम-सुन्दर। 84 जन्म बाद सुन्दर बनते हैं। फिर यह बनते हैं। इनकी आत्मा 84 जन्म लेती है। एक चित्र भी काफी है समझाने लिए। तुम जानते हो हम यह बने रहे हैं। बाबा बनाने वाला है। पहले थोड़ेई पता था हम ऐसे बनेंगे। अभी समझते हो। तो पुरुषार्थ भी पूरा करना चाहिए। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना प्रारब्ध मिलेगी। अच्छा। स्वदर्शनचक्र धारी हो बैठो।

मीठे 2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।